मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रशासन और उनके परिणामों की व्याख्या
(Administration of Psychological Tests and Interpretation of their Results)

शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है; जैसे–स्मृति परीक्षण (Memory Tests), बुद्धि परीक्षण (Intelligence Tests), अभिक्षमता परीक्षण (Aptitude Tests), रुचि परीक्षण (Interests Tests) और व्यक्तित्व परीक्षण (Personality Tests)। और किसी एक मनोवैज्ञानिक गुण के आँकलन (Assessment) के लिए भी अनेक प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का निर्माण किया गया है। यहाँ उन सबके प्रशासन, फलांक और फिर फलांकनों की व्याख्या करना सम्भव नहीं। हम यहाँ एक व्यक्तित्व परीक्षण के प्रशासन, फलांकन और फिर फालांकों की व्याख्या का उदाहरण प्रस्तुत कर आपका मार्ग प्रशस्त किए देते हैं।

1. परीक्षण का नाम – मरे प्रासंगिक अन्तर्बोध परीक्षण (Murray Thematic Apperception Test, T.A.T.)

2. अनुकूलनकर्ता – डॉ० उमा चौधरी

3. मापे जाने वाला गुण–मनुष्य की आवश्यकताएँ

Scanned with CamScanner

4. उपयोगिता – मनोचिकित्सा एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में।

5 (a) परीक्षण के सिद्धान्त – इस परीक्षण का निर्माण मनोवैज्ञानिक **मरे** (Henry Murray) ने किया था। यह परीक्षण मनोविज्ञान के इस तथ्य पर आधारित है कि मनुष्य अपने परिवेश की जिन वस्तुओं, व्यक्तियों एवं क्रियाओं आदि के सम्पर्क में आता है वे उसके मन-मस्तिष्क में संचित होती रहती हैं। इस प्रकार के सभी संचित अनुभवों को मनोवैज्ञानिक भाषा में अन्तर्बोध (Apperception) कहते हैं। अब जब कभी मनुष्य के सामने कोई अपरिचित उद्दीपक (Stimulus) प्रस्तुत किया जाता है तो उसके प्रति वह जो अनुक्रिया करता है उसमें उसके अन्तर्बोध का बड़ा हाथ होता है। अतः इन अनुक्रियाओं से उसके व्यक्तित्व का मापन किया जा सकता है।

5 (b) परीक्षण के पद (Items) – **मरे** के मूल परीक्षण में 30 कार्ड थे जिनमें 10 कार्ड केवल पुरुषों के लिए, 10 कार्ड केवल महिलाओं के लिए और 10 कार्ड महिला-पुरुष दोनों के लिए थे। इन कार्डों पर मनुष्य के व्यावहारिक जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित चित्र बने हैं। ये चित्र विदेशी परिवेश के हैं। डॉ० उमा चौधरी ने इनके आधार पर भारतीय परिवेश के केवल 13 चित्रों का निर्माण किया है जो 15 सेमी×18·5 सेमी आकार के हैं और जो 21·5 सेमी × 27·5 सेमी आकार के 13 कार्डों पर अलग-अलग अंकित हैं। नीचे कार्ड संख्या-1 और कार्ड संख्या-2 पर अंकित चित्रों की फोटो अंकित हैं।

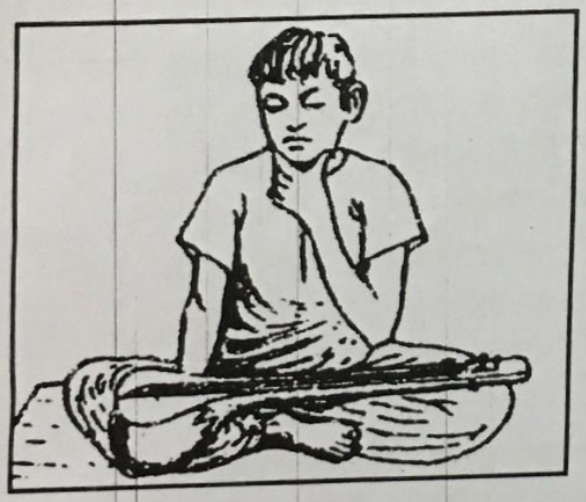

कार्ड संख्या—1

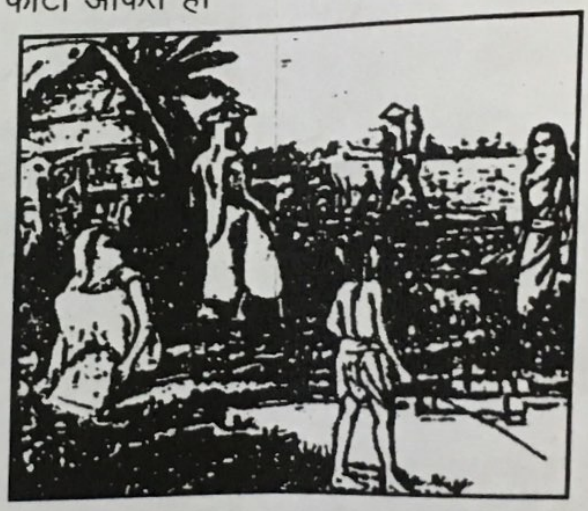

कार्ड संख्या—2

6. परीक्षण का प्रशासन – इस परीक्षण का प्रशासन वैयक्तिक एवं सामूहिक दोनों रूपों में किया जा सकता है परन्तु किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का सही-सही मापन करने के लिए इसे सामान्यतः वैयक्तिक रूप में ही प्रशासित किया जाता है। किसी व्यक्ति (प्रयोज्य) पर इसे प्रशासित करने के लिए निम्नलिखित पदों का अनुसरण किया जाता है–

(1) सर्वप्रथम परीक्षणकर्ता प्रयोज्य को मनोविज्ञानशाला अथवा अन्य किसी शान्त एवं स्वच्छ कमरे में अपने सामने आराम से बैठाता है।

(2) प्रयोज्य को सही स्थान पर सही रूप में बैठाने के बाद उसके साथ सौहार्द (Rapport) स्थापित किया जाता है। सौहार्द स्थापित करने का सर्वोत्तम उपाय प्रयोज्य के साथ प्रेम, सहानुभूति और सहयोगपूर्ण व्यवहार करना है। परीक्षणकर्ता प्रयोज्य की किसी भी कठिनाई अथवा शंका को दूर करता है और उसे यह अहसास कराता है कि वह उसका हितैषी है, मित्र है। इसी स्थिति में प्रयोज्य किसी भी प्रकार के भय एवं तनाव से मुक्त होता है और उद्दीपकों के प्रति अनुक्रिया करता है। इस प्रकार का सौहार्द परीक्षण के आदि से अन्त तक बना रहना

Scanned with CamScanner

आवश्यक होता है। सौहार्द स्थापित करने के बाद प्रयोज्य को परीक्षण का सामान्य परिचय दिया जाता है और उसे उस परीक्षण से क्या लाभ होगा, यह बताया जाता है।

(3) जब प्रयोज्य में उत्सुकता जागृत हो जाती है तो उसे परीक्षण सम्बन्धी निर्देश दिए जाते हैं। उसे बताया जाता है कि उसे एक-एक करके 13 चित्र दिए जाएँगे उसे अपने सामने उपस्थित चित्र को देखकर उस पर एक कहानी बनानी है। उसे यह भी निर्देश दिया जाता है कि वह कहानी में यह बताने का प्रयत्न करे कि चित्र में कौन-कौन व्यक्ति हैं, वे क्या कर रहे हैं, उनके मन में किस प्रकार के भाव हैं, उसमें मुख्य पात्र कौन है और कहानी का अन्त क्या होगा।

(4) अब प्रयोज्य को सर्वप्रथम प्रथम कार्ड दिया जाता है और उसका नम्बर नोट कर लिया जाता है। इसके बाद प्रयोज्य के सामने कार्ड रखने और प्रयोज्य के द्वारा उस कार्ड के चित्र से सम्बन्धित कहानी लिखना शुरू करने के बीच के समय को नोट किया जाता है। और इसके बाद कहानी लिखने में लिए गए समय को नोट किया जाता है। समय का मापन स्टॉप वाच द्वारा सरलता से किया जा सकता है।

यही प्रक्रिया अन्य शेष 12 कार्डों के साथ अपनाई जाती है। यूँ किसी भी कार्ड पर बने चित्र के ऊपर कहानी रचना के लिए कोई समय सीमा निर्धारित नहीं है परन्तु फिर भी प्रत्येक कार्ड के ऊपर कहानी सोचने एवं लिखने, दोनों में लिए गए समय को अलग-अलग नोट किया जाता है।

इस परीक्षण के सम्पादन में सामान्यतः एक घन्टे का समय लगना चाहिए। यदि इससे कम या अधिक समय लगता है तो उससे प्रयोज्य के यथा गुण (माँग) की तीव्रता का पता चलता है।

(5) दो-तीन दिन के बाद प्रयोज्य को पुनः बुलाया जाता है। यदि प्रयोज्य ने किसी कहानी में कोई अस्पष्ट बात लिखी हो तो उससे पूछकर उसे स्पष्ट कर लिया जाता है। साथ ही कहानियों के आधार पर कुछ सूचनाएँ प्राप्त की जाती हैं।

(6) अन्त में इन कहानियों का विश्लेषण कर प्रयोज्य के व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जाता है।

7. परीक्षण का अंकन एवं व्याख्या—प्रयोज्य द्वारा कार्डों के चित्र सम्बन्धी लिखी कहानियों का एक-एक करके विश्लेषण किया जाता है। इस विश्लेषण में मुख्य रूप से निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान दिया जाता है—

(1) कथानक—सर्वप्रथम यह देखा जाता है कि प्रयोज्य ने किसी चित्र से सम्बन्धित कहानी में कहानी का आधार क्या माना है, कहानी का मुख्य पात्र किसे माना है, कहानी के मुख्य पात्र से अन्य पात्रों के क्या सम्बन्ध स्थापित किए हैं और कहानी के अन्त के बारे में क्या कल्पना की है।

(2) विषयवस्तु प्रतिपादन—इसके अन्तर्गत यह देखा जाता है कि कहानी की विषयवस्तु को किस रूप में संगठित किया गया है और उसे किस रूप में (भाषा एवं शैली) में प्रस्तुत किया गया है।

(3) संवेग—कहानी विश्लेषण का तीसरा तत्त्व संवेगों का पता लगाना होता है। प्रयोज्य कहाँ और कितना चिन्ताग्रस्त हुआ है, कहाँ और कितना प्रसन्न हुआ है, कहाँ और कितना दुःखी हुआ है और कहाँ वह ईर्षालु हुआ है, आदि।

(4) चिन्ता का स्वरूप—चिन्ता के स्वरूप एवं उसके कारणों का पता लगाया जाता है और उन्हें लिखा जाता है।

(5) दबाव—कहानी विश्लेषण का एक तत्त्व दबाव का पता लगाना होता है। कहानी के प्रसंग के आधार पर वातावरणीय दबाव का पता चलता है और साथ ही यह पता चलता है कि वातावरणीय दबाव में प्रयोज्य की क्या आवश्यकताएँ हैं।

(6) आवश्यकताएँ तथा द्वन्द्व— आवश्यकताओं के साथ-साथ उनसे उपजे द्वन्द्वों को नोट किया जाता है।

Scanned with CamScanner

(7) **सुरक्षा उपाय**–इसके अन्तर्गत प्रयोज्य द्वारा अन्तर्द्वन्द्वों से बचने के लिए अपनाए गए सुरक्षात्मक उपायों को लिखा जाता है।

(8) **अहम् की संरचना**–इसके अन्तर्गत यह देखा जाता है कि प्रयोज्य का अहम् वास्तविक है, अवास्तविक है, सुरक्षात्मक है या बचावात्मक है।

इन सब आधारों पर परीक्षण निर्देशिका (Manual) की सहायता से प्रयोज्य की अनुक्रियाओं को अंक प्रदान किए जाते हैं और इन अंकों के आधार पर व्यक्तित्व की आवश्यकताओं का पता लगाया जाता है

Scanned with CamScanner